प्रारंभिक परीक्षा

डॉलर सूचकांक(Dollar Index)

संदर्भ

भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले 87.29 के ऐतिहासिक निचले स्तर पर पहुंच गया, जिससे आयातित मुद्रास्फीति और व्यापार घाटे में वृद्धि को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। **डॉलर सूचकांक(DXY) में 1.24% की तेज वृद्धि के बाद यह गिरावट आई है।**

डॉलर सूचकांक के बारे में -

- **डॉलर सूचकांक (DXY) विदेशी मुद्राओं की एक टोकरी के सापेक्ष अमेरिकी डॉलर के मूल्य का एक माप है।**
- **मुद्राओं की टोकरी:** DXY अमेरिकी डॉलर की तुलना छह प्रमुख मुद्राओं से करता है:
    - **यूरो (EUR)** – 57.6% (उच्चतम भार)
    - **जापानी येन (JPY)** – 13.6%
    - **ब्रिटिश पाउंड (GBP)** – 11.9%
    - **कैनेडियन डॉलर (CAD)** – 9.1%
    - **स्वीडिश क्रोना (SEK)** – 4.2%
    - **स्विस फ्रैंक (CHF)** – 3.6%
- **आधार वर्ष और गणना:** इसकी **स्थापना 1973 में**, ब्रेटन वुड्स समझौते के विघटन के तुरंत बाद, **100 के आधार मान के साथ की गई थी।**
- **DXY को प्रभावित करने वाले कारक:**
    - **मौद्रिक नीति:** अमेरिकी फेडरल रिजर्व ब्याज दर में परिवर्तन।
    - **आर्थिक संकेतक**: जीडीपी वृद्धि, रोजगार दरें, मुद्रास्फीति।
    - **वैश्विक घटनाएँ**: युद्ध, मंदी या वित्तीय संकट सूचकांक को प्रभावित करते हैं।

रुपए के अवमूल्यन के पीछे कारण

- **डॉलर सूचकांक में मजबूती और व्यापार युद्ध की चिंताएं:**
    - अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा कनाडा, मैक्सिको और चीन से आयात पर 25% टैरिफ लगाए जाने के बाद डॉलर सूचकांक(DXY) में उछाल आया, जिससे वैश्विक व्यापार युद्ध की आशंका बढ़ गई।
- **पूंजी बहिर्वाह 💰:**
    - अक्टूबर 2024 से**,** विदेशी संस्थागत निवेशकों (FII) ने 11 बिलियन डॉलर की भारतीय संपत्ति बेची है।
    - इस पूंजी बहिर्गमन से विदेशी मुद्रा भंडार कम हो जाता है और भारतीय रुपया कमजोर हो जाता है।
- **बढ़ता व्यापार घाटा 📈:**
    - भारत का व्यापार घाटा वित्त वर्ष 2025 (अब तक) में $188 बिलियन तक पहुंच गया**,** जो वित्त वर्ष 2024 से 18% अधिक है।
    - उच्च व्यापार घाटा डॉलर की मांग बढ़ाता है**,** जिससे भारतीय रुपये पर दबाव पड़ता है।
- **मजबूत अमेरिकी आर्थिक आंकड़े और बढ़ती ब्याज दरें:**
    - मजबूत अमेरिकी नौकरी डेटा और उच्च फेडरल रिजर्व ब्याज दरों की उम्मीदों ने अमेरिकी ट्रेजरी पैदावार को निवेशकों के लिए अधिक आकर्षक बना दिया है।

रुपये के अवमूल्यन का आर्थिक प्रभाव

- **नकारात्मक प्रभाव:**
  - उच्च आयातित मुद्रास्फीति 📈
  - भारतीय कंपनियों के लिए ऋण सेवा लागत अधिक 💰
  - पूंजी पलायन और कम एफडीआई प्रवाह 📉
- **सकारात्मक प्रभाव:**
  - **निर्यातोन्मुख क्षेत्रों को बढ़ावा** 💼 **-** कमजोर रुपया वैश्विक स्तर पर भारतीय निर्यात को सस्ता बनाता है, जिससे आईटी, फार्मास्यूटिकल्स और टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों को लाभ होता है।
  - **उच्च प्रेषण मूल्य:** विदेशों में काम करने वाले भारतीयों को कमजोर रुपये से लाभ होता है, क्योंकि प्रेषण से अधिक रुपये प्राप्त होते हैं, जिससे घरेलू खपत को समर्थन मिलता है।

स्रोत: **The Hindu - rupee breaches 87 against dollar**

सरकार आवश्यक ईंधन इथेनॉल का उत्पादन कैसे करेगी?

संदर्भ

भारत अगले दो महीनों में पेट्रोल के साथ 20% इथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य हासिल करने के लिए तैयार है - जो तय समय से एक साल पहले है। इसके लिए सालाना 1,100 करोड़ लीटर ईंधन इथेनॉल के उत्पादन की आवश्यकता है।

इथेनॉल उत्पादन के स्रोत -

- **आवश्यक 1,100 करोड़ लीटर ईंधन इथेनॉल विभिन्न स्रोतों से आएगा:**
    - **चीनी और उच्च श्रेणी का गुड़** – 400 करोड़ लीटर
    - **भारतीय खाद्य निगम (FCI) चावल** – 110 करोड़ लीटर
    - **टूटे चावल** – निम्न योगदान
    - **मक्का** – 350-400 करोड़ लीटर

इथेनॉल उत्पादन में मक्का की भूमिका -

- भारत 2020 से पहले मक्के से बहुत कम इथेनॉल का उत्पादन कर रहा था। अब, मक्के का योगदान लगभग 400 करोड़ लीटर होने की उम्मीद है।
- अनाज आधारित भट्टियां और दोहरी-फ़ीड चीनी भट्टियां (जो ऑफ-सीजन में मक्के का उपयोग कर सकती हैं) विकसित की जा रही हैं।
- **मक्का उत्पादन में वृद्धि:**
    - 2020-21 से मक्के का उत्पादन 6 मिलियन टन बढ़ गया है।
    - 2024-25 में मक्के का उत्पादन 42 मिलियन टन होने का अनुमान है, इसमें से 9 मिलियन टन का उपयोग इथेनॉल उत्पादन के लिए किया जाएगा।

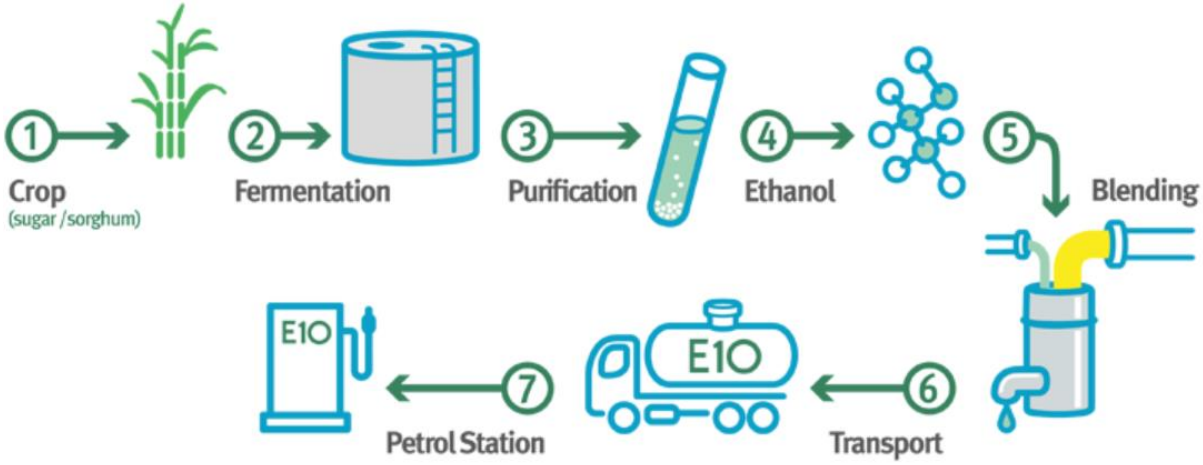

मक्का के बारे में -

- **बढ़ने की स्थितियाँ:**
  - यह मुख्य रूप से अर्ध-शुष्क परिस्थितियों (25 - 75 सेमी वर्षा) वाले क्षेत्रों में उगाई जाने वाली वर्षा आधारित खरीफ फसल है।
  - 100 सेमी से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में इसकी खेती नहीं की जा सकती।
  - यह अच्छी जल निकास वाली, उपजाऊ मिट्टी में सबसे अच्छा उगता है।
  - मक्के को उसके बढ़ते मौसम के दौरान लगातार नमी की आवश्यकता होती है लेकिन यह जल जमाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
- **भारत में मक्का वर्षा (खरीफ) और शीत (रबी) दोनों मौसम में उगाया जाता है।**
  - खरीफ मक्का - मक्का क्षेत्र का 83%, जबकि रबी मक्का - मक्का क्षेत्र का 17%।
- **शीर्ष मक्का उत्पादक देश:** संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और ब्राजील (भारत -6वें स्थान पर)।
- **भारत में शीर्ष मक्का उत्पादक राज्य:** कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश।

स्रोत: **The Hindu - Required fuel ethanol**

ट्रम्प प्रशासन का USAID को बंद करने का कदम

संदर्भ

अमेरिकी प्रशासन ने विदेशी सहायता रोकने, प्रमुख अधिकारियों को हटाने तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए संयुक्त राज्य एजेंसी के वित्त पोषण में कटौती करने पर जोर दिया है।

यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी ऑफ़ इंटरनेशनल डेवलपमेंट (USAID) के बारे में -

- **USAID अमेरिकी सरकार की प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी और विकास शाखा है।**
- **यह गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढांचे, लोकतंत्र निर्माण आदि से संबंधित कार्यक्रमों के लिए गैर सरकारी संगठनों, विदेशी सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य अमेरिकी एजेंसियों को वित्त पोषित करता है।**
- इसने विदेशों में अमेरिकी प्रभाव फैलाने में अहम भूमिका निभाई है।
- **वित्तवर्ष 2023 में USAID के शीर्ष प्राप्तकर्ता**: यूक्रेन, इथियोपिया, जॉर्डन, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो, सोमालिया।

USAID का इतिहास

- **शीत युद्ध की भूराजनीति में उत्पत्ति:**
  - अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अंतर्राष्ट्रीय सहायता को विदेश नीति उपकरण के रूप में उपयोग किया है।
  - **मार्शल योजना (द्वितीय विश्व युद्ध के बाद) - साम्यवाद के प्रसार को रोकने** के लिए यूरोप को आर्थिक सहायता प्रदान की गई।
  - **शीत युद्ध** के दौरान, सोवियत संघ का मुकाबला करने के लिए अमेरिका ने **आर्थिक, तकनीकी और सैन्य सहायता बढ़ा दी।**
- **USAID का निर्माण (1961):**
  - **इसकी स्थापना राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने 1961 के विदेशी सहायता अधिनियम के तहत की थी।**
  - प्रारंभ में इसका ध्यान क्यूबा क्रांति (1959) के बाद लैटिन अमेरिका में साम्यवाद को रोकने पर था।
    - बाद में लैटिन अमेरिकी विकास के लिए अरबों डॉलर की पहल - "एलायंस फॉर प्रोग्रेस" की शुरुआत की।

स्रोत: **Indian Express - USAID**

एक्स्ट्रा-लॉन्ग स्टेपल (ELS) कॉटन

संदर्भ

केंद्रीय वित्त मंत्री ने केंद्रीय बजट में कॉटन (कपास) की खेती में उत्पादकता, स्थिरता और गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए पांच वर्षीय मिशन की घोषणा की है, जिसमें ELS कॉटन किस्मों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

ELS-कॉटन के बारे में -

- **यह एक कपास किस्म है जिसके रेशे की लम्बाई 30 मिमी होती है।**
- **उत्पत्ति**: दक्षिण अमेरिका, चीन, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया और पेरू में उगाया जाता है।
- **गुणवत्ता**: प्रीमियम कपड़ा, नरम, मजबूत और अधिक टिकाऊ पैदा करता है।
- **उपयोग**: वस्त्र की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मध्यम स्टेपल कपास के साथ मिश्रित।
- **प्रमुख ELS प्रकार**: पिमा (यूएसए), पेरू (इज़राइल), गीज़ा (मिस्र), सुविन और डीसीएच-32 (भारत), बराकात (सूडान)।
- **भारत में यह अटपाडी तालुका (महाराष्ट्र का सांगली जिला) और कोयंबटूर (तमिलनाडु) में उगाया जाता है।**

स्टेपल लंबाई के आधार पर कॉटन (कपास) का वर्गीकरण -

- कपास को रेशे की लम्बाई के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है:
  - **शॉर्ट स्टेपल – 21 मिमी से कम**
  - **मीडियम स्टेपल – 25 से 28.6 मिमी** (**भारत के कपास उत्पादन का 96%**)
  - **लॉन्ग स्टेपल – 29 मिमी** और उससे अधिक
  - **एक्स्ट्रा-लॉन्ग स्टेपल (ELS) – 30 मिमी और उससे अधिक**

भारत में ELS-कॉटन(कपास) क्यों नहीं उगाया जाता?

- **कम उपज:** जबकि मध्यम श्रेणी के कपास से प्रति एकड़ 10-12 क्विंटल उपज प्राप्त होती है, ELS कपास से केवल 7-8 क्विंटल उपज प्राप्त होती है।
- **बाजार की चुनौतियां:** कमजोर बाजार संपर्क के कारण किसानों को प्रीमियम कीमतों पर ELS कपास बेचने में संघर्ष करना पड़ता है।

स्रोत: **Indian Express - ELS cotton**

वन संरक्षण पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

संदर्भ

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने **केंद्र सरकार और राज्यों को यह सुनिश्चित करने का** निर्देश दिया है कि **वनीकरण के लिए प्रतिपूरक भूमि उपलब्ध कराए बिना वन भूमि में कोई कमी न हो। यह निर्णय वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 में 2023 के संशोधनों को** चुनौती देने वाले चल रहे मामले का हिस्सा है।

सुप्रीम कोर्ट के प्रमुख निर्देश

- **वन भूमि में कोई कटौती नहीं:** न्यायालय ने विकास परियोजनाओं के लिए वन भूमि के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया, जब तक कि प्रतिपूरक भूमि उपलब्ध नहीं करा दी जाती।
- **रैखिक परियोजनाओं के लिए प्रतिपूरक वनरोपण की आवश्यकता होती है**: यदि वन भूमि का उपयोग **रैखिक परियोजनाओं** (जैसे सड़क, रेलवे और ट्रांसमिशन लाइन) के लिए किया जाता है, तो अन्यत्र समान मात्रा में भूमि पर वनरोपण किया जाना चाहिए।
- **'वन' का शब्दकोश अर्थ जारी रहेगा**: न्यायालय ने दोहराया कि 'वन' की परिभाषा **व्यापक और सर्वव्यापी रहनी चाहिए, जैसा कि टी.एन. गोदावर्मन थिरुमुलपाद मामले (1996)** में स्थापित किया गया था।

वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 में संशोधन

- **वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 वनों की कटाई को रोकने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए अधिनियमित किया गया था।**
- **2023 के संशोधनों से क्या बदलाव आया?**
    - **धारा 1A** प्रस्तुत की गई, जिसने **'वन' की परिभाषा को सीमित कर दिया**:
        - घोषित वन
        - 1980 के बाद सरकारी अभिलेखों में वन के रूप में दर्ज भूमि
- **याचिकाकर्ताओं द्वारा उठाई गई चिंताएं:**
    - याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि **धारा 1A ने वन संरक्षण को कमजोर कर दिया है**: लगभग **1.97 लाख वर्ग किलोमीटर** अघोषित वन भूमि को बाहर कर दिया गया है

'वन' की परिभाषा पर सुप्रीम कोर्ट का रुख

- **टीएन गोदावर्मन थिरुमुलपाद मामले (1996)** के अनुसार, सर्वोच्च **न्यायालय ने पुनः पुष्टि की कि 'वन' शब्द का अर्थ व्यापक** बना रहेगा।
- इसका अर्थ यह है कि वन भूमि **केवल सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वनों तक ही सीमित नहीं होगी**, बल्कि इसमें निम्नलिखित भी शामिल होंगे:
    - **जंगल जैसे क्षेत्र**
    - **अवर्गीकृत वन**
    - **सामुदायिक वन भूमि**
- **न्यायालय ने आदेश दिया कि यह व्यापक परिभाषा तब तक वैध रहेगी जब तक सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश वन भूमि का समेकित रिकॉर्ड तैयार नहीं कर लेते।**

स्रोत: **The Hindu - Do not reduce forest land for linear projects**

समाचार संक्षेप में

केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (CFSL)

- सर्वोच्च न्यायालय **मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह को** राज्य की जातीय हिंसा में कथित रूप से शामिल करने वाली ऑडियो रिकॉर्डिंग की प्रामाणिकता पर **CFSL रिपोर्ट का इंतजार करेगा।**

CFSL के बारे में -

- **CFSL एक वैज्ञानिक विभाग है जो भारत सरकार के लिए अपराध साक्ष्यों का विश्लेषण करता है।**
- **यह गृह मंत्रालय और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) की एक शाखा है।**
- **कार्य:**
    - सीबीआई, दिल्ली पुलिस और अन्य सरकारी विभागों के लिए अपराध प्रदर्शनों का विश्लेषण करता है।
    - न्यायालयों को विशेषज्ञ राय उपलब्ध कराता है।
    - फोरेंसिक विज्ञान में सुधार के लिए अनुसंधान और विकास का संचालन करता है।
- **CFSL द्वारा कवर किए गए विषय:** बैलिस्टिक्स, जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, विष विज्ञान, विस्फोटक, फोरेंसिक भौतिकी, फोरेंसिक रसायन विज्ञान और फोरेंसिक जीवविज्ञान।
- **भारत में कुल CFSL प्रयोगशालाएं (7):** दिल्ली, भोपाल, चंडीगढ़, कामरूप, हैदराबाद, पुणे और कोलकाता।

स्रोत: The Hindu - Apex court to wait for CFSL report

नया खोजा गया क्षुद्रग्रह 2024 YR4

- **YR4 का पता पहली बार दिसंबर 2023 में चिली टेलीस्कोप द्वारा लगाया गया था।**
- इसका व्यास 40 से 100 मीटर के बीच है - जो एक फुटबॉल मैदान के बराबर है।
- अप्रैल 2024 के मध्य में दृश्य से ओझल होने से पहले खगोलविद इसके सटीक आकार और प्रक्षेपवक्र को मापने के लिए शक्तिशाली दूरबीनों का उपयोग कर रहे हैं।
    - यह 2028 तक दोबारा दिखाई नहीं देगा।
- **प्रभाव क्षमता (टोरिनो स्केल):**
    - टोरिनो स्केल क्षुद्रग्रह प्रभावों के जोखिम को वर्गीकृत करता है (स्केल 0 से 10)।
    - **NASA** ने 2024 **YR**4 को 3 (मध्यम जोखिम) रेटिंग दी है।

क्षुद्रग्रह कितनी बार पृथ्वी से टकराते हैं?

- **छोटे क्षुद्रग्रह:**
    - **प्रतिदिन** हजारों की संख्या में ये ग्रह पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं।
    - अधिकांश **घर्षण के कारण जल जाते हैं**, कभी-कभी **आग के गोले के रूप में दिखाई देते हैं**।
- **बड़े क्षुद्रग्रह:**
    - 1 किमी से अधिक व्यास वाले ये चक्रवात लगभग हर 260 मिलियन वर्ष में पृथ्वी पर आते हैं।
    - सौरमंडल की विशालता के कारण क्षुद्रग्रहों का सीधा प्रभाव दुर्लभ है।
    - छोटे क्षुद्रग्रह (~ 40 मीटर) प्रवेश की गति और कोण पर निर्भर करते हुए, पूरे शहर को तबाह कर सकते हैं।

स्रोत: Indian Express - YR4

संपादकीय सारांश

भारत का न्यायोचित खनिज ढांचा

संदर्भ

भारत ने पिछले दशक में स्वच्छ ऊर्जा की ओर अपने परिवर्तन में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जैसा कि बजटीय आवंटन और नीतिगत पहलों में परिलक्षित होता है। हालाँकि, धन का कम उपयोग, जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान जैसी चुनौतियाँ अभी भी बाधाएँ खड़ी कर रही हैं।

भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन में बाधाएं

- **बजटीय आवंटन का कम उपयोग:** 2015 और 2023 को छोड़कर, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) को बजट आवंटन अक्सर कम उपयोग में रहा है, जिससे संशोधित अनुमान (आरई) कम हो गए हैं।
    - यह कार्यान्वयन में आने वाली बाधाओं और धीमी निधि वितरण को दर्शाता है।

तथ्य

बजटीय आवंटन

- **वित्तीय वर्ष 2015:** बजट आवंटन ₹1,535 करोड़ था।
- **वित्तीय वर्ष 2025:** आवंटन ₹32,626 करोड़ होने का अनुमान है

- **पीएम-कुसुम योजना की सीमित सफलता:** 2019 में 34,422 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य सौर सिंचाई पंपों और ग्रिड से जुड़े सौर संयंत्रों को बढ़ावा देना था।
    - हालाँकि, इसे बहुत धीमी प्रतिक्रिया मिली, तथा इसकी स्थापित क्षमता आधे गीगावाट से भी कम थी।
    - इसके धीमी गति से अपनाए जाने के पीछे के कारकों में किसानों में जागरूकता की कमी, वित्तीय बाधाएं और नियामक बाधाएं शामिल हैं।
- **बिजली उत्पादन के लिए कोयले पर उच्च निर्भरता:** कुल स्थापित क्षमता का 46% नवीकरणीय स्रोतों से आने के बावजूद (अक्टूबर 2024 तक), वास्तविक बिजली उत्पादन का 70% अभी भी कोयले से आता है ।
    - नवीकरणीय ऊर्जा की अस्थायी प्रकृति के कारण जीवाश्म ईंधन से पूरी तरह से दूर जाना कठिन हो जाता है।
- **बैटरी भंडारण प्रौद्योगिकी का धीमा विस्तार:** आवधिक नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के प्रबंधन के लिए ग्रिड-स्केल बैटरी भंडारण आवश्यक है।
    - हालाँकि, भारत उन्नत रसायन सेल (एसीसी) बैटरी विनिर्माण और भंडारण बुनियादी ढांचे को विकसित करने में धीमा रहा है।
    - उच्च लागत और आयात पर तकनीकी निर्भरता (विशेषकर चीन से) प्रमुख चुनौतियां बनी हुई हैं।
- **सौर उपकरणों पर उच्च आयात शुल्क का प्रभाव:** घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने सौर मॉड्यूल पर 40% और सौर सेल पर 25% मूल सीमा शुल्क (बीसीडी) लगाया।
    - हालाँकि, इससे सौर ऊर्जा स्थापना लागत में वृद्धि हुई, जिससे सौर क्षमता वृद्धि धीमी हो गई।
    - चीन पर आयात निर्भरता कम करने के उद्देश्य से उठाया गया यह कदम उल्टा पड़ गया, जिससे परियोजना की अर्थव्यवस्था और नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार पर असर पड़ा।
- **महत्वपूर्ण खनिज और आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियां:** भारत में महत्वपूर्ण खनिजों (जैसे लिथियम, कोबाल्ट और निकल) के लिए एक मजबूत आपूर्ति श्रृंखला का अभाव है, जो बैटरी भंडारण और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के लिए आवश्यक है।

  - सौर घटकों और लिथियम-आयन बैटरियों के लिए चीन पर भारी निर्भरता रणनीतिक जोखिम पैदा करती है।
  - घरेलू महत्वपूर्ण खनिज ढांचे के बिना, भारत को आवश्यक संसाधनों की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने में संघर्ष करना पड़ता है।
- **नीति एवं विनियामक अनिश्चितताएं:** बार-बार नीतिगत बदलाव और दीर्घकालिक विनियामक स्पष्टता का अभाव निवेशकों के विश्वास को प्रभावित करता है।
  - सौर मॉड्यूल और एडवांस्ड केमिस्ट्री सेल (एसीसी) बैटरी के लिए पीएलआई योजना एक सकारात्मक कदम है, लेकिन इसके बेहतर कार्यान्वयन और उद्योग की भागीदारी की आवश्यकता है ।
  - नवीकरणीय ऊर्जा के लिए राज्य-स्तरीय नीतियां अक्सर भिन्न होती हैं, जिससे कार्यान्वयन में असंगतियां पैदा होती हैं।
- **स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं की पूंजी-गहन प्रकृति:** नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, विशेष रूप से बैटरी भंडारण और सौर मॉड्यूल विनिर्माण , के लिए उच्च पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।
  - वित्तीय बाधाएं, उच्च उधार लागत और प्रोत्साहनों की कमी से निजी क्षेत्र की भागीदारी धीमी हो जाती है।

आगे की राह

स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन को गति देने के लिए भारत को निम्नलिखित कार्य करने होंगे:

- निधि उपयोग और नीति स्थिरता में सुधार लाना।
- ग्रिड-स्केल बैटरी भंडारण आवश्यकताओं को संबोधित करना।
- नवीकरणीय ऊर्जा की सामर्थ्य के साथ आयात शुल्क को संतुलित करना।
- चीन पर निर्भरता कम करने के लिए एक व्यापक महत्वपूर्ण खनिज ढांचा विकसित करना।
- वित्तपोषण प्रोत्साहन और नीति समर्थन के माध्यम से निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करना।

स्रोत: **The Hindu: Green And Clean**

भारत का समुद्री क्षेत्र

संदर्भ

- भारत सरकार ने समुद्री क्षेत्र के विकास के लिए मजबूत प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है, जिसे पिछली सरकारों द्वारा बड़े पैमाने पर उपेक्षित किया गया था।
- हालांकि, पर्याप्त निवेश के बावजूद, शिपिंग उद्योग में स्थिरता बनी हुई है और विदेशी जहाजों तथा अन्य परिवहन साधनों के कारण इसकी बाजार हिस्सेदारी घटती जा रही है।
- केंद्रीय बजट 2025 में कुछ सुधार प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन महत्वपूर्ण मुद्दे, विशेषकर कर असमानताएं, अभी भी अनसुलझे हैं।

भारतीय शिपिंग उद्योग में ठहराव

सागरमाला कार्यक्रम: निवेश और प्रगति

- सरकार की प्रमुख समुद्री कार्यक्रम **सागरमाला का उद्देश्य बंदरगाह अवसंरचना और संपर्क को बढ़ावा देना है।**
- **सितंबर 2024** तक, कार्यक्रम ने **2035** तक **5.8 लाख करोड़ रुपये** के निवेश की आवश्यकता वाली **839 परियोजनाओं की रूपरेखा तैयार की थी**।
- **अब तक की प्रगति:**
  - ₹1.22 लाख करोड़ की 241 परियोजनाएं पूरी हुईं।
  - ₹1.8 लाख करोड़ मूल्य की 234 परियोजनाएं कार्यान्वयन के अधीन हैं।
  - विकास के विभिन्न चरणों में ₹2.78 लाख करोड़ के अनुमानित निवेश वाली 364 परियोजनाएं।
- **निवेश का विवरण:**
  - ₹2.91 लाख करोड़ (50%) → बंदरगाह आधुनिकीकरण।
  - ₹2.06 लाख करोड़ (35%) → पोर्ट कनेक्टिविटी।
  - ₹55.8 हजार करोड़ (10%) → बंदरगाह आधारित औद्योगीकरण।
  - शेष 5% → तटीय सामुदायिक विकास, तटीय शिपिंग बुनियादी ढाँचा और अंतर्देशीय जल परिवहन।

आर्थिक विकास और एक्जिम व्यापार विस्तार

- **कोविड-19 की बाधाओं के बावजूद भारत की जीडीपी ₹153 ट्रिलियन (2016-17) से बढ़कर ₹272 ट्रिलियन (2022-23) हो गई, जो 7% की सीएजीआर पर 43% की वृद्धि है।**
- **अनुमान**:
  - **2024** में **3.7 ट्रिलियन डॉलर**
  - **2027** तक **5 ट्रिलियन डॉलर**
  - **2030** तक **7 ट्रिलियन डॉलर**
- **भारत का एक्जिम व्यापार:**
  - $66 बिलियन (2016-17) से बढ़कर $116 बिलियन (2022) → 77% संचयी वृद्धि (12.83% वार्षिक वृद्धि)।
  - **लक्ष्य:** 2030 तक 2 ट्रिलियन डॉलर का निर्यात

- **कार्गो और पोत यातायात में कम वृद्धि:** प्रमुख बंदरगाहों पर कार्गो का संचालन 1,071.76 मिलियन टन (2016-17) से केवल 14.26% बढ़कर 1,249.99 मिलियन टन (2020-21) हो गया (वार्षिक वृद्धि: 2.85%)।
  - संभाले गए जहाजों की संख्या 5.93% घटकर 21,655 (2016-17) से 20,371 (2020-21) हो गई।

  - भारतीय शिपिंग, एक्सिम कार्गो के लिए विदेशी जहाजों तथा घरेलू कार्गो के लिए रेल एवं सड़क परिवहन के कारण बाजार हिस्सेदारी खोती जा रही है।
- **प्रतिस्पर्धी वित्तपोषण का अभाव एवं उच्च पूंजी लागत:** उच्च उधार लागत और कम ऋण अवधि निवेश को हतोत्साहित करती है।
  - कठोर संपार्श्विक आवश्यकताएं जहाज मालिकों को जहाजों को संपार्श्विक के रूप में उपयोग करने के बजाय अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करने के लिए बाध्य करती हैं।
  - बैंकों में शिपिंग चक्र की समझ का अभाव है, जिसके कारण उनकी ऋण पुनर्गठन नीतियां लचीली नहीं हैं।
- **भारतीय जहाजों के लिए कर एवं विनियामक नुकसान:** जहाज खरीद पर 5% आईजीएसटी (विदेशी ध्वज वाले जहाजों पर लागू नहीं)।
  - भारतीय नाविकों के वेतन पर टीडीएस लगता है, जबकि भारतीय नाविकों को रोजगार देने वाले विदेशी जहाजों को इससे छूट दी गई है।
  - उच्च बंदरगाह शुल्क और भारतीय जहाज मालिकों के लिए अतिरिक्त वित्तीय बोझ प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करते हैं।
- **विदेशी ध्वज वाले जहाजों पर अत्यधिक निर्भरता:** भारतीय शिपिंग कंपनियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई होती है, जिसके कारण बाजार में उनकी हिस्सेदारी कम हो जाती है।
- **जहाज निर्माण एवं बेड़े आधुनिकीकरण में चुनौतियाँ:**
  - **पुराना होता बेड़ा**: जहाजों की औसत आयु 26 वर्ष (2022-23) थी, जो बढ़कर 21 वर्ष (2024) हो गई, जिसमें केवल 34 नए जहाज शामिल किए गए।
    - जहाज स्वामित्व में भारत की वैश्विक रैंकिंग 17 से गिरकर 19 हो गयी।
  - बड़े जहाज निर्माण के लिए बुनियादी ढांचे का अंतराल
  - प्रमुख घटकों (इस्पात, मशीनरी, स्पेयर पार्ट्स) के लिए आयात पर निर्भरता के कारण जहाज निर्माण की उच्च लागत।
  - आयातित जहाज निर्माण उपकरणों पर सीमा शुल्क से लागत बढ़ जाती है।
  - कार्यबल में कौशल अंतराल जहाज निर्माण दक्षता को सीमित करता है।
  - हरित एवं डिजिटल प्रौद्योगिकियों में सीमित निवेश
  - वैश्विक शिपिंग हरित ऊर्जा और डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रही है, लेकिन पर्यावरण अनुकूल जहाजों और डिजिटल लॉजिस्टिक्स में भारत का निवेश कम है।
  - एलएनजी-ईंधन या हाइड्रोजन-आधारित जहाजों के लिए प्रोत्साहन की कमी स्थिरता लक्ष्यों में बाधा डालती है।

सरकारी सुधार और बजट 2025 की घोषणाएं

- ₹25,000 करोड़ समुद्री विकास निधि (एमडीएफ) (49% सरकार द्वारा वित्त पोषित, बाकी प्रमुख बंदरगाहों से)।
- बड़े जहाजों के लिए बुनियादी ढांचे की स्थिति।
- जहाज निर्माण समूहों का निर्माण।
- जहाज निर्माण के पुर्जों और उपकरणों पर 10 साल की सीमा शुल्क छूट।
- जहाज निर्माण के लिए संशोधित वित्तीय सहायता नीति।
- भारतीय यार्डों में जहाज तोड़ने के लिए ऋण प्रोत्साहन।
- अंतर्देशीय जहाजों के लिए टन भार कर योजना का विस्तार।

अनुत्तरित प्रश्न

- एमडीएफ फंडिंग (एकल-वर्षीय या बहु-वर्षीय आवंटन?) पर स्पष्टता का अभाव।
- शिपिंग और जहाज निर्माण की पूंजी-गहन प्रकृति को देखते हुए ₹25,000 करोड़ अपर्याप्त हो सकते हैं।

- दीर्घकालिक वित्तपोषण की आवश्यकता:
  - कम ब्याज दरें।
  - ऋण चुकौती अवधि 7-10 वर्ष।
- जीएचजी उत्सर्जन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए तत्काल बेड़े प्रतिस्थापन और हरित प्रौद्योगिकी निवेश की आवश्यकता है।
- बड़े जहाजों के निर्माण और मौजूदा जहाजों के आधुनिकीकरण के लिए नए शिपयार्ड की आवश्यकता।

एक कदम आगे, लेकिन पर्याप्त नहीं

केंद्रीय बजट 2025 में कुछ बहुत ज़रूरी सुधार पेश किए गए हैं, लेकिन वित्तीय अनिश्चितताओं और कर असमानताओं के कारण प्रगति कमज़ोर पड़ने का ख़तरा है। समुद्री क्षेत्र को सही मायने में पुनर्जीवित करने के लिए , सरकार को यह करना चाहिए:

- प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों पर दीर्घकालिक वित्तपोषण सुनिश्चित करना।
- उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एमडीएफ वित्तपोषण का विस्तार करना।
- नये शिपयार्डों में निवेश करना तथा मौजूदा शिपयार्डों का आधुनिकीकरण करना।
- भारतीय ध्वज वाले जहाजों के लिए कर संबंधी असुविधाएं हटाई जाएं।
- कम आयात शुल्क और कौशल विकास के माध्यम से जहाज निर्माण प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।

स्रोत: **The Hindu: Some wind behind the sails of India's shipping industry**

विकसित भारत के लिए सही नौकरियों का सृजन

संदर्भ

प्रस्तुत **केन्द्रीय बजट 2025** के साथ, भारत को अल्पकालिक मांग वृद्धि के बजाय **दीर्घकालिक रोजगार सृजन और वास्तविक वेतन वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।**

भारत के आर्थिक भविष्य के लिए आवश्यक प्रमुख प्रकार की नौकरियाँ

जलवायु-अनुकूल नौकरियाँ

- **जलवायु परिवर्तन का आर्थिक प्रभाव**
  - जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित देशों में भारत 7वें स्थान पर है (2019)।
  - जलवायु संबंधी क्षति के कारण 2021 में 159 बिलियन डॉलर का नुकसान।
  - अनुकूलन लागत 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है (आरबीआई अनुमान)।
- **जलवायु-अनुकूल रोजगार सृजन रणनीतियाँ**
  - **अंतिम छोर तक आवागमन के लिए राज्य-सब्सिडी वाले ई-रिक्शा**: 6,00,000 गांवों में प्रति गांव 3-4 ई-रिक्शा → 2 मिलियन नौकरियां सृजित होंगी।
    - महिला-केंद्रित रोजगार पहल
  - **संपीड़ित बायोगैस संयंत्रों में निजी निवेश को बढ़ावा देना**: 5,000 लक्ष्य के मुकाबले केवल 82 संयंत्र स्थापित किए गए (वित्त वर्ष 23-24) → विस्तार की तत्काल आवश्यकता।
  - **500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा लक्ष्य में तेजी लाना**: 1 मिलियन से अधिक नौकरियां पैदा होंगी।
    - **विकेन्द्रीकृत और छत पर सौर ऊर्जा पहल → उपयोगिता-स्तरीय सौर ऊर्जा की तुलना में 7 गुना अधिक श्रम-गहन (सीईईडब्ल्यू अध्ययन)** ।

एआई-लचीली नौकरियाँ

- **नौकरी बाजार पर एआई का प्रभाव:** अगले 10 वर्षों में भारत में 50% स्वचालन अपनाने की उम्मीद (मैककिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट)।
  - आईटी और व्यावसायिक सेवाएं भारत के सेवा निर्यात में 70% से अधिक का योगदान देती हैं (आर्थिक सर्वेक्षण 2021), लेकिन एआई व्यवधान का सामना करती हैं।
  - **एआई द्वारा नौकरियों की जगह लेने के उदाहरण**:
    - मेटाजीपीटी अनुकरण सॉफ्टवेयर कंपनियां
    - गूगल का 25% कोड AI लिख रहा है।
    - भारत में एआई-संचालित चैटबॉट के कारण नौकरियां खत्म हो रही हैं।
- **एआई-लचीली नौकरी सृजन रणनीतियाँ**
  - **शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा विस्तार**: स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों और शिक्षकों के लिए लाखों रिक्तियों को भरना।
  - **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) को सुदृढ़ बनाना**: ग्रामीण कारीगरों, किसानों और शिल्पकारों के लिए वैश्विक और शहरी बाजार संपर्क को सुगम बनाना।

आकांक्षा-केंद्रित नौकरियाँ

- **ग्रामीण युवाओं के रोजगार के लिए चुनौतियाँ:** स्टार्टअप में बढ़ती भागीदारी के बावजूद , ग्रामीण युवाओं में निम्न कारणों से आत्मविश्वास की कमी है:
  - आधारभूत शिक्षा का अभाव (अंग्रेजी दक्षता सहित)।
  - पालन-पोषण में संसाधनों की कमी।

- परीक्षा की तैयारी के लिए सरकारी नौकरियों और कोचिंग संस्कृति पर निर्भरता बढ़ जाती है।
- गैर-कृषि रोजगार वृद्धि धीमी है, जिसके लिए कृषि-बाहर रोजगार समाधान की आवश्यकता है ।

- **आकांक्षा-केंद्रित रोजगार सृजन के लिए रणनीतियाँ**
  - **एकीकृत पैकहाउस**: 95%+ बुनियादी ढांचे के अंतर को पाटने के लिए 70,000 पैकहाउस बनाए जाएंगे।
    - खाद्य प्रसंस्करण एवं लॉजिस्टिक्स में 2 मिलियन से अधिक नौकरियां सृजित होंगी।
  - **तकनीक-सक्षम कृषि-इनपुट विनिर्माण**: उच्च-आयात कृषि क्षेत्रों को बढ़ावा देता है।
  - **डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से ग्रामीण रोजगार की पुनः ब्रांडिंग**:
    - ग्रामीण युवाओं के लिए कृषि से इतर नौकरियों को आकांक्षापूर्ण बनाया गया है।
  - **राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन - तिलहन**: खाद्य तेलों पर भारत की 57% आयात निर्भरता को पूर्व-डब्ल्यूटीओ स्तर तक कम करना।
    - स्थानीय तिलहन प्रसंस्करण (सोयाबीन, सूरजमुखी, शीत-दबाव तेल) को पुनर्जीवित करना।
  - **बड़े पैमाने पर ग्रामीण व्यवसायों के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी)**: परीक्षा लीक और सीमित भर्ती पर युवाओं की कुंठा को दूर करता है।

स्रोत: **The Hindu: The kind of jobs needed for the 'Viksit Bharat' goal**